से आक्रमणकारी आक्रमण करते रहे हैं अतः भारत की विदेश नीति में देश की सीमाओं की सुरक्षा को सर्वोपरि स्थान दिया है।

;3द्ध आर्थिक कारक : पंडित नेहरू के शब्दों में, ''अन्तिम रूप में विदेश नीति को आर्थिक कारक सुनिश्चित करते हैं।'' यही वजह है कि भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया है ताकि सभी राष्ट्रों से भरपूर सहायता प्राप्त कर सके।

है। आजाद भारत ने अपनी विदेश नीति में देश के प्राचीन आदर्श को यथावत स्थान दिया है।

;4द्ध राष्ट्रीय हित : भारत के राष्ट्रीय हितों का यह तकाजा था और आज भी है कि संसार के झंझटों से दूर रहकर दुनिया के सभी देशों के साथ मित्रातापूर्ण सम्बन्ध बनाए हुए है।

भारत की विदेश नीति के मौलिक सिद्धान्त ;ठेंपब च्तपदबपइसमे व िथ्वतमपहद च्वसपबलद्ध भारत की विदेश नीति निम्नलिखित मौलिक सिद्धान्तों पर टिकी हुई है। ;1द्ध गुट निरपेक्षता ;2द्ध पंचशील ;3द्ध शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व

;4द्ध साम्राज्यवाद का विरोध ;5द्ध निःशस्त्रीकरण ;6द्ध संयुक्त राष्ट्र संघ में विश्वास ;7द्ध मानव अधिकारों के प्रति सम्मान ;8द्ध जातिभेद व रंगभेद का विरोध ;9द्ध राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा ;10द्ध पड़ोसी राष्ट्रों से मैत्री सम्बन्ध। गुट निरपेक्षता ;छवद ंसपहदउमदजद्ध : गुट निरपेक्षता से तात्पर्य है किसी शक्ति गुट में सम्मिलित न होना। अथवा शक्ति गुटों से अलग रहकर राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के प्रश्नों पर स्वतंत्रा व निष्पक्ष रूप में विचार रखना। भारत संसार में विद्यमान तनाव को दूर करने के लिए अमन चैन का साम्राज्य स्थापित करने का इच्छुक रहा है। इस प्रकार गुट निरपेक्षता का आदर्श भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख सिद्धान्त रहा है। यह विदेश नीति दोनों शक्ति गुटों से भारत के सद्भावना और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के साथ–साथ दोनों ही महाशक्तियों और समर्थक देशों से बड़े पैमाने पर आर्थिक वित्तीय और तकनीकी सहायता प्राप्त करने में मदद ही दी है। लेकिन यह विदेशी सहायता लेते समय भारत ने दुनिया के किसी भी देश को भारत पर अपनी शर्तें लादने नहीं दी है। भारत की विदेश नीति की पहचान गुट निरपेक्षता के रूप में ही की जाती रही है। पंचशील : पंचशील शब्द भगवान गौतम बुद्ध के पाँच नैतिक नियमों से सम्बन्धित था। सन् 1954 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू ने चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री जी चाऊ–एन–लाई के साथ तिब्बत के मामले में समझौता करते समय जिन पाँच नियमों को लागू किया उन्हें ही पंचशील का सिद्धान्त कहते हैं। जो इस प्रकार हैंμ

;1द्ध प्रभुसत्ता तथा क्षेत्राीय अखंडता का परस्पर सम्मान किया जाएगा।	;2द्ध अनाक्रमण अर्थात एक राज्य दूसरे राज्य पर आक्रमण नहीं करेगा।	;3द्ध अहस्तक्षेप अर्थात एक दूसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा।	;4द्ध समानता तथा पारस्परिक सहयोग व लाभ अर्थात एक देश दूसरे देश के साथ समानता का व्यवहार करेगा तथा पारस्परिक सहयोग की भावना बनाए रखेगा तथा एक दूसरे के लाभ के लिए कार्य करेगा।	;5द्ध शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व अर्थात दुनिया के सभी देश स्वतंत्रातापूर्वक अपनी आन्तरिक व विदेश नीति को बनाए रखने का अधिकार रखते हैं और सभी को अपने आदर्शों के अनुसार जीवन व्यतीत करने का अधिकार है।

गुट निरपेक्षता की नीति : गुटनिरपेक्षता आन्दोलन के संस्थापक देश–भारत के पं नेहरू

युगोस्लाविया के मार्शल टीटो, मिस्र के नासिर, इण्डोनेशिया के डा.सुकर्णो, घाना के अनुव्रूफमा 1947 से ही भारत की विदेशनीति का 'गुट निरपेक्षता' एक मौलिक सिद्धान्त रहा है। स्वतंत्राता प्राप्ति के पश्चात भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उसने एक ओर दोनों शक्ति गुटों से अलग रहकर नवोदित व विकासशील देशों को गुटनिरपेक्षता की नीति पर चलने के लिए प्रेरित किया है जिससे संसार में भय, आतंक, शस्त्रों की होड़, उपनिवेशवाद, नवउपनिवेशवाद, जातिवाद व रंगभेद जैसी परिस्थितियों के तीखेपन को कम किया है वही दूसरी ओर विभिन्न देशों के बीच मित्राता, सहयोग का वातवारण तैयार किया है। जिससे संसार के लोगों में एक विश्व परिवार के रूप में साथ–साथ रहने की भावना बलवती हुई है।

गुट निरपेक्षता में भारत की भूमिका : गुट निरपेक्षता में भारत की भूमिका कापफी महत्त्वपूर्ण रही है जो उसकी विदेश नीति की सपफलता का प्रतीक है जैसा कि हम जानते हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद दुनिया दो गुटों में बंटी हुई थी। भारत ने आजादी के पश्चात शक्ति गुटों में शामिल न होने तथा स्वतंत्रा नीति अपनाने का निश्चय किया। वह संसार की प्रत्येक घटना के सम्बन्ध में उसकी अच्छाई व बुराई के आधार पर निर्णय लेना चाहता था। भारत द्वारा प्रस्तावित इस नीति का नवोदित राष्ट्रों ने स्वागत किया। भारत इसके जन्म से ही इस आन्दोलन को मार्गदर्शित करता चला आ रहा है। स भारत ने सर्वप्रथम कोरिया संकट के दौरान अपना महत्त्वपूर्ण पफैसला दिया। अमेरिका की धमकी की चिन्ता न करते हुए स्वतन्त्रा मार्ग अपनाया और समझौता कराने का प्रयास किया। स हिन्द चीन क्षेत्रा को शीतयुद्ध का अखाड़ा बनने से रोकने का प्रयत्न किया इसके लिए भारत ने वर्मा,

श्रीलंका, इंडोनेशिया, पाकिस्तान आदि देशों से मिलकर इस स्थिति पर विचार किया। स 1955 में स्वेज नहर संकट के दौरान भारत की नीति ने इस आन्दोलन के देशों को मजबूत किया। स भारत ने इजराइल और मिश्र के बीच गाजापट्टी के अस्थायी युद्धविराम के अधीक्षण के लिए अपनी सेनाएं भेजी। स नामीविया की स्वतन्त्राता तथा दक्षिण अनीका में रंगभेद नीति के समापन के लिए प्रयास किया यूं देखा जाए तो इस आन्दोलन का प्रणेता भारत ही रहा है। भारत के प्रयासों का ही पफल है कि सितम्बर 1961 के प्रथम सम्मेलन में 25 देशों से चलकर यह सम्मेलन अब 114+22=136 सदस्य देशों का संगठन बन चुका है। यह आन्दोलन विश्वशान्ति के प्रयास में भारत के प्रयासों के परिणामस्वरूप अभूपूर्व योगदान दिया है।

स प्रस्तुत चित्रा में दर्शाए गए कूटनीतिज्ञों को पहचानों। स उक्त कूटनीतिज्ञों का सम्बन्ध किन देशों से हैं बताएँ। स उस अन्तर्राष्ट्रीय मंच का नाम बताएँ जिसके लिए ये लोग एकत्रित हुए हैं।

भारत चीन सम्बन्ध भारत चीन के आपसी सम्बन्धों का इतिहास अति प्राचीन है। 415–454 ई.पू. में विक्रमादित्य के शासन काल में चीनी यात्री 'पफाह्यान' भारत आया तथा 606–647 ई.पू. में हर्षवर्धन के शासन काल में 'ह्वेनसांग' भारत आया। यही नहीं बल्कि हम कह सकते हैं कि भारत ही वह पवित्रा भूमि है जहाँ उनके धर्म की उत्पत्ति हुई। भारत के धर्म प्रचारक जैसे परमार्थ, गुणभद्र और धर्मरक्ष आदि विद्वान चीन गये। 1949 में चीनी क्रान्ति के बाद भारत ने साम्यवादी क्रान्ति का स्वागत किया और उसे मान्यता भी प्रदान करने वाला दूसरा देश बना इस प्रकार हम कह सकते है कि 1959 तक भारत–चीन सम्बन्ध कापफी घनिष्ट व प्रगाढ़ रहे। 29 अप्रैल 1954 को चीनी प्रधानमंत्राी चाऊ–एन–लाई ने पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर करके रिश्ते को और प्रगाढ़ किया।

दोनों देशों के मध्य खटास तब पैदा होना शुरू हो गया जब तिब्बत जैसे वपफर स्टेट को चीन ने अपने कब्जे में लेने का प्रयास किया। वहाँ के धार्मिक गुरु दलाई लामा को भारत में शरण दिए जाने को लेकर चीनी विरोध सामने आया। चीन ने एक और चाल चली और उसने अंग्रेज सरकार द्वारा निर्धारित मैकमोहन रेखा को मानने से इनकार कर दिया और भारतीय भूक्षेत्रा में पड़ने वाले लद्दाख क्षेत्रा के अक्साई–चीन तथा

अरुणांचल प्रदेश के अधिकांश भागों पर अपना दावा करने लगा। देखते–देखते 20 अक्टूबर 1962 को चीन ने भारत के नेपफा ;छम्थ्।द्ध और लद्दाख प्रदेशों पर हमला बोल दिया। अमेरिकी हस्तक्षेप के बाद 20 नवम्बर, 1962 को चीन ने एकतरपफा युद्ध विराम की घोषणा की। इस आक्रमण का परिणाम यह हुआ कि कुछ प्रमुख सैनिक कमांडरों ने या तो इस्तीपफा दे दिया या अवकाश ग्रहण कर लिया। यहाँ तक कि तत्कालीन रक्षामंत्राी वी.के. कृष्णमेनन ने भी मंत्रिमंडल से इस्तीपफा दे दिया। प्रधानमंत्राी नेहरू जी की सर्वत्रा आलोचना हुई। 1962 से लेकर 1978 तक दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध सभी प्रकार से विखण्डित रहे। लेकिन 1979 में जनता पार्टी में विदेश मंत्राी श्री वाजपेयी ने चीन की यात्राा की पिफर वहाँ से सम्बन्धों में पिफर मधुरता आने लगी और दोनों देशों के मध्य व्यापारिक सम्बन्धों में कापफी सुधार आते जा रहे हैं। 1992 में चीनी प्रधानमंत्राी ली पफंग की भारत यात्राा। 1992 में भारत में चीनी समारोह, 1994 में जनेवा में चल रहे मानवाधिकार आयोग के अधिवेश में चीन द्वारा पाक का साथ न देना। 1996 दोनों देशों मध्य ऐतिहासिक सन्धि, 14 जनवरी, 2002 में चीनी प्रधानमंत्राी श्री झूरोंग जी द्वारा भारतीय प्रधानमंत्राी को आश्वासन कि चीन आतंकवाद के विरुद्ध भारत का साथ देगा। यही नहीं वर्तमान समय में भी दोनों के मध्य एक अच्छे पड़ोसी की भाँति 2007 में 36 बिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापार हुआ साथ ही चीन सीमा विवाद को भी आपसी तालमेल से सुलझाने का इच्छुक है। लेकिन जैसा कि हम जानते हैं कि यह ड्रेगन कब किधर मुड़ जाय पता नहीं। चीन एक तरपफ तो पाक का साथ दे रहा है और पाक में सड़क महामार्ग बना रहा है तो दूसरी तरपफ ब्रह्मपुत्रा नदी का रूख मोड़ रहा है। साथ ही भारतीय सीमा पर सड़क व रेल मार्ग का लगातार विस्तार कर रहा है। अभी हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्राी की अरुणांचल प्रदेश की यात्राा पर विरोध जताया था। ऐसी परिस्थिति में हमें व्यापार के साथ ही कापफी सर्तकता बरतने की आवश्यकता है। अभ्यासगत प्रश्न भारत–चीन सम्बन्धों के सन्दर्भ में भारतीय पिफल्म 'हकीकत' से छात्राों को अवगत कराया जाय। यह पिफल्म चेतन आनंद द्वारा निर्देशित पिफल्म है जो प्दकव.बैपदं ूंत 1962 पर आधारित पिफल्म है। उक्त पिफल्म के आधार पर भारतीय सेना का प्रयास व कमियाँ तथा चीनी आक्रमण एवं उनकी सपफलता की समीक्षा करने को कहा जाए। हमारी तत्कालीन विदेश नीति की कमियों की भी चर्चा की जाए। सीमा विवाद व चीनी हरकतेंμवर्ष 1913–14 में मैक मोहन रेखा का निर्धारण तथा शिमला समझौते में चीन द्वारा मान्यता अब उसे मानने से इनकार। स ब्रह्मपुत्रा नदी पर चीन द्वारा तीन बाँध बनाने ;जिक्सूद्ध ;झाग्सूद्ध ;जियाझाद्ध स 17 जनकृ 2013 को चीनी सैनिकों द्वारा चुमार क्षेत्रा में घुसपैठ। परिणाम स्वरूप 17 जुलाई 2013 को भारती प्रधानमंत्राी द्वारा भारत–चीन सीमा पर 50,000 अतिरिक्त सैनिकों की तैनाती की घोषणा। स कराकोरम क्षेत्रा में सड़क निर्माण, तिब्बत तक रेल मार्ग तथा 18 हवाई अड्डों का निर्माण भारत के लिए खतरे की घंटी है।

स चीन द्वारा म्यामार के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाकर म्यामार के द्वीपों पर नौसैनिक सुविधाएं बढ़ाकर हिंद महासागर में भारतीय नौसेना पर नजर बनाए हुए है। स यही नहीं मालद्वीप ने चीन को मराओ द्वीप लीज पर दे रखा है। स बंग्लादेश ने चटगांव बन्दरगाह चीन को विस्तारीकरण हेतु दे रखा है। स अंडमान निकोबार द्वीप समूह से लगभग 50 कि.मीकृ की दूरी पर स्थित काको द्वीप पर चीन अपनी ताकत बढ़ाकर आधुनिक नौसैनिक सुविधाएं बढ़ा रहा है। स मानचित्रीय ;मानचित्रीयद्ध आक्रमणµचीन द्वारा अरुणांचल को अपने नक्शे में दिखाना ़ जमचचस टपं ;नत्थी विजाद्ध अरुणांचल प्रदेश ;प्रधानमंत्री मोदी के टपे पर आपत्तिद्ध।

नई हलचल

चीन व पाकिस्तान के मध्य बढ़ते रिश्ते भारत के लिए खतरे की घंटी साबित होगी। जैसा कि अप्रैल 2015 में चीन व पाक के मध्य 51 समझौते हुए है। जी न्यूज की रिर्पोट के अनुसार भारत–अमेरिकी सम्बन्धें में बढ़ती प्रगाढ़ता, परिणामस्वरूप पाक–चीन के मध्य बढ़ती नजदीकियाँ। 'बड़े पापा मिल गये' अर्थात अमेरिका द्वारा उपेक्षा किए जाने के साथ चीन द्वारा उस अनाथ बालक ;पाकिस्तानद्ध की सहायता अर्थात 51 समझौते भी जिनपिंग व नवाज शरीपफ के मध्य। समझौते की मुख्य बिन्दू :

1 कृ पाक में 46 अरब डालर का निवेश

2. पाक–चीन आर्थिक गलियारा ;च्व्ज्ञ स्थित गिलगिट बालिस्तान से होकर ग्वादर पोंट तक ;3000 किलोमीटरद्ध

3 कृ चीन को पफायदा – 12000 कि.मी. की दूरी बची ;पश्चिम एशिया से व्यापार आसानद्ध 4.चीन की हिन्द महासागर में आसान पहुँच

5. च्व्ज्ञ में 40 आतंकी कैम्प

6कृ भारत–पाक सीमा पर हाइटेक बैंकरर्स चीन द्वारा बनाए जाने का प्रस्ताव 7.चीन द्वारा कराकोरम दर्रा का चौड़ीकरण

8कृच्व्ज्ञ में चीन द्वारा सड़कें व अपनी हवाई पट्टी बनाना 9कृपाक में 22 नये टनल बनाए जाने का प्रस्ताव

10. च्व्ज्ञ में हजारों की संख्या में चीनी मजदूर

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि आर्थिक गलियाये के माध्यम से चीन भारत की पश्चिमी सीमा के नजदीक, काराकोरम दर्रा के चौड़ीकरण से चीन द्वारा प्रेषित हथियारों की आपूर्ति आसान, च्व्ज्ञ चीन के कब्जे में। अर्थात चीन–पाक के मध्य बढ़ती नजदीकियाँ भारत के लिए खतरनाक साबित होगा और मजबूर होकर भारत को अपना ध्यान विकास से हटाकर रक्षा खर्च बढ़ाने पर मजबूर होना पड़ेगा।

भारत–पाक सम्बन्ध भारत सरकार अधिनियम 1947 के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार ने भारत को दो स्वतंत्रा राष्ट्रों में विभक्त कर दिया। इस अधिनियम के अन्तर्गत सभी रियासतों को यह स्वतंत्राता दी गयी कि वे इच्छानुसार भारत या पाक में शामिल हो सकते हैं। अथवा अलग अस्तित्व भी कायम रख सकते हैं। ऐसी स्थिति में लगभग सभी रियासतें भारत में शामिल हो गयीं मगर कश्मीर के प्रति पाक का रवैया शत्राुतापूर्ण रहा। वैसे भी जिन परिस्थितियों में पाक का जन्म हुआ, उनमें यह स्वाभाविक था कि भारत और पाक के बीच कापफी समय तक एक दूसरे के प्रति अविश्वास बना रहे। विभिन्न कालों में भारत–पाक रिश्ते इस प्रकार रहेμ

स 1947 में पाक द्वारा कश्मीर पर आक्रमण–परिणामμजम्मू कश्मीर रियासत का भारत में विलय। 1963 esa Jhuxj esa gtjr cy efLtn esa iSxEcj eqgEen lkgc dk ckypksjhA स 1965 में पाक द्वारा कच्छ पर आक्रमणμजून 1965 में दोनों के बीच युद्ध विराम और 19 जनवरी 1966 ताशकन्द समझौता। श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का ताशकन्द में निधन। स 1971 पाक द्वारा भारतीय सीमाओं पर चौतरपफा हमला, परिणामμपूर्वी पाकिस्तान का बंग्लादेश के :i esa mn;A 94000 ikd lSfudksa dk Hkkjrh; lsuk ds le{k leiZ.kA l 3 tqykbZ] 1972 f'keyk le>kSrk (Jherh bfUnjk xkaèkh o tqYiQhdkj vyh HkqV~Vks) स मई 1998 में भारत द्वारा परमाणु विस्पफोटμपरिणाम पाक द्वारा भी ऐसा किया गया। स सन् 2001 आगरा शिखर सम्मेलनμजनरल परवेज मुशर्रपफ का बीच में छोड़कर वापस चला जाना।। fnlEcj 2001 Hkkjrh; laln ij vkradoknh geykA स भारतीय पहलμ

;पद्ध दिल्ली–लाहौर के मध्य समझौता एक्सप्रेस ट्रेन की शुरुआत।	;पपद्ध 2005 में श्रीनगर–मुजफ्रपफराबाद बस सेवा का शुभारम्भ।	;पपपद्ध व्यापार को 10 विलियन अमेरिकी डॉलर तक करने की पहल।	;पअद्ध 2005 में आए भूकम्प में पाक को भारी मदद।

स सन् 2008 में मुम्बई आतंकी हमला। स पाक की भूमि पर आतंकवाद का जन्म व पफलने पफूलने का स्वर्णिम अवसर स पाक की जमीन आतंकवादियों की शरणस्थली। स आये दिन जम्मू कश्मीर सीमा पर आतंकी घुसपैठ। स सीमा पर रह रहकर अंधाधुंध पफायरिंग ताकि पाक आतंकियों को आसानी से भारतीय सीमा में घुसा सके। उपरोक्त तथ्यों के अलावा हम भी दिन प्रतिदिन यह भाँपते रहते हैं कि पाक भारत को सदैव अस्थिर

ण्एण्ऋ ण्ण्ण

1111?

ण.111•द 1WI

ण्ण ण ण्ण ण्ण्ण्ण..

द्व ८

२ ए एए ए

ξ एए ए 11झ1१. १ •

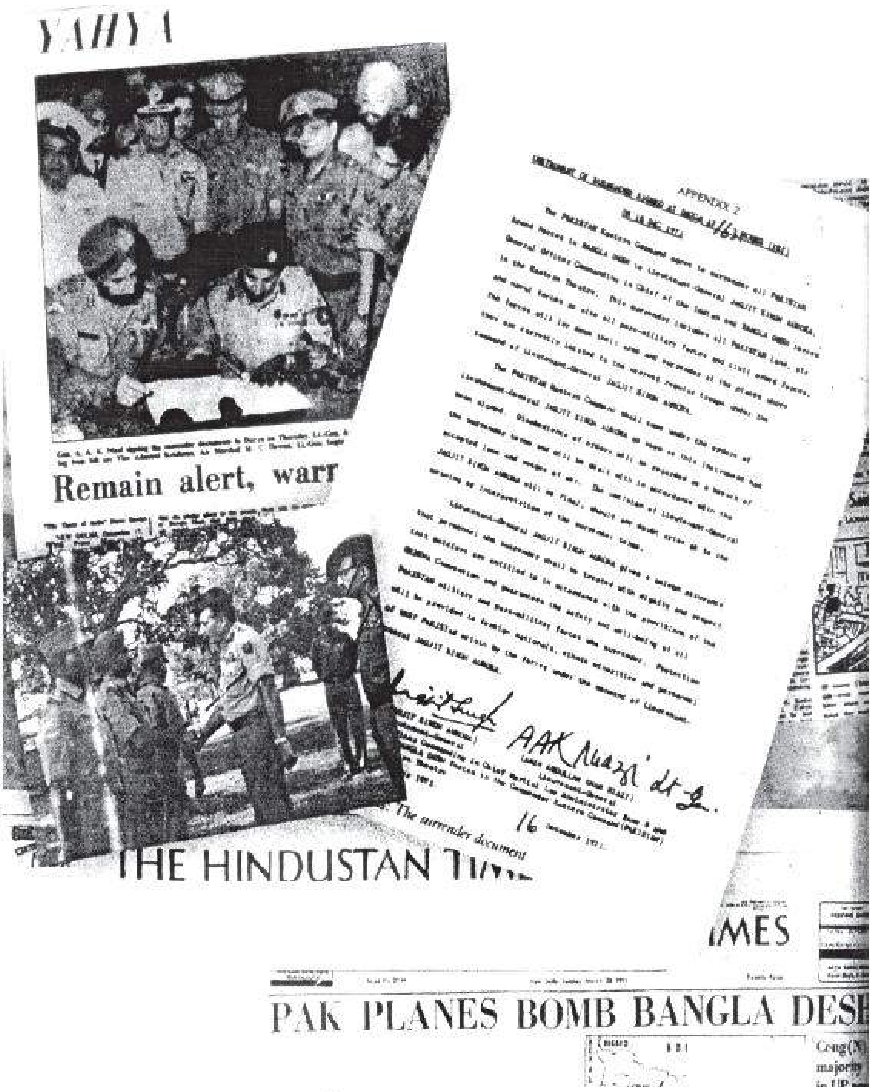

General

.सध्मएिश्रद्धे ज्एि? श्रद्ध ध्सक्ष्स-

वउ मत ंन सस इ ल

1971. ष्डिइंपस क्मसीप

ठ ाममच वज

श्प्न्श्रप्प्सµ्ज स?µैµव्ल्म्त्µश्प्स १?µ?ज्ळस्प?णµकैभ्श •

इसरूरेज थ्सश एएएए थ्तममक वउ पिही जमते ए ए

Hnlud11•1m1

क्रियाकलाप आधारित राजनैतिक विज्ञान शिक्षण

श्रठ

ए एएएएएएएएए ए एएएएएएएएएएए

ठ!पएम्न ढ!ज्ञजदज5 वपिद्सपं

OUR TROOPS ON OUTSKIRTS OF LAHORE
IAF Planes Blast Military Installations
PAK FORCES ON THE RUN IN CHHAMB AREA
BLACK-OUT IS ORDERED IN GREATER BOMBAY
Indo-Pak Flights Cancelled
Jaurian In Flames: Success In Uri Sector Too
"The Times of India" News Service
The Hindustan Times
ALKOT-PASRUR RAILWAY TAKEN
IAF pounds Sargodha, Chak Jhumra airport
1965
The Hindustan Times
TROOPS MARCH INTO PAKISTAN

healthy
babies
Prescribed by Doctors
for over 20 years
SOLD EVERYWHERE

रखने हेतु आतंकी कार्यवाही करता रहता है अभी हाल में ही भारत के गणतंत्रा दिवस ;26 जनवरी, 2015द्ध को अमेरिकी राष्ट्रपति के आगमन पर आतंकी हमले की चेतावनी तथा अमेरिका द्वारा ऐसा न करने की मनाही। उसके बाद भी पाक बाज नहीं आया और अरब सागर के जलीय मार्ग का अनुसरण करते हुए हथियारों वे विस्पफोटकों से भरी नौका द्वारा भारतीय सीमा पर प्रवेश की कोशिश जिसके सम्बन्ध में अमेरिकी खुपिफया एजेंसी ने पहले ही भारत को चेतावनी दे रखी थी लेकिन भारतीय नौसेना की सर्तकता ने उन्हें अपनी नौका को उड़ाना पड़ा। ;जो कि एक विवादित प्रश्न बन चुका है।द्ध अन्यथा पकड़े जाने पर पाक की पोल खुल जाती। अभ्यासगत क्रियाकलाप : छात्रों को 'गदर' फिल्म दिखायी जाय। स इस पिफल्म के माध्यम से भारत–पाक तनाव के कारणों पर चर्चा करायी जाए। स दोनों पक्षों की हकीकतों पर सविस्तार चर्चा की जाय। स छात्राों को दो ग्रुपो में बांटकर भारत–पाक के मध्यम उभरते तनाव, मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता करायी जाय। स छात्राों से तनाव कम करने के उपायों पर सुझाव माँगे जाये।

कारगिल युद्ध

भारतीयµप्रधानमंत्रीµश्रीµअटलµबिहारीµवाजपेयीµजीµद्वाराµपाकµसरकारµकेµबीचµसमझौताµ;दोनोंµदेशµसीमाµसे अपनीµसेनाएंµकुछµदूरीµपरµपीछेµरहेगीद्धµभारतµद्वाराµबसµसेवा,µट्रेनµसेवा,µवायुसेनाµके द्वाराµदोनोंµदेशोंµकेµदिलों कोµआपसµमिलानेµकाµप्रयासµतोµदूसरीµतरपफµपाकµद्वाराµधोखेµसेµअन्दरूनीµतौरµपरµभारत–पाकµसीमाµकारगिल, द्रासµकाश्कोहµआदिद्धµअन्दरµसेµपहाड़ीµइलाकोंµमेंµहेलीपैड बनानाµतथाµहथियारोंµकाµजखीराµइक्ट्ठाµकरना रहाµजिसकीµपरिणतिµधोखाµदेकरµअचानकµमई–जूनµ1999µमेंµभारतीयµक्षेत्राµपरµजबरदस्तµहमलाµकरµदिया। दोनोंµदेशोंµकेµमध्यµपाकµद्वाराµजबरदस्ती युद्धद्धµयुद्धµलम्बाµखिंचा।µ26µजुलाईµ1999µतकµभारतीयµसेनाµने अपनेµसभीµठिकानोंµकोµअपनेµकब्जेµमेंµलेµलिया।µयुद्धµसमाप्तिµकेµबादµपाक–आर्मीµवµपाकµसरकारµकेµबीचµ;q)µdksµysdjµfookn [kM+kµgksµx;kµvkSjµvrr%µikdµdhµlÙkkµdµlSfudµlkkldµdsµgkFkksaµesaµvkµx;hA

अभ्यासगत प्रश्न

1. सही विकल्प चुने।

;द्ध 1950 में किस देश ने तिब्बत पर नियन्त्राण किया?

;पद्ध भारत ;पपद्ध पाकिस्तान ;पपपद्ध चीन ;पअद्ध अमेरिका

;इद्ध भारत चीन के मध्य पंचशील समझौता कब हुआ?

;पद्ध 1948 ;पपद्ध 1950 ;पपपद्ध 1954 ;पअद्ध 1955

;बद्ध 1962 में किस देश ने भारत पर आक्रमण किया?

;पद्ध अमेरिका ;पपद्ध ब्रिटेन ;पपपद्ध पाकिस्तान ;पअद्ध चीन

;कद्ध 1965 में किस देश ने भारत पर आक्रमण किया?

;पद्ध नेपाल ;पपद्ध पाकिस्तान ;पपपद्ध श्रीलंका ;पअद्ध चीन

;मद्ध शिमला समझौता किन दो देशों के बीच सम्पन्न हुआ।

;पद्ध भारत–नेपाल ;पपद्ध भारत–पाकिस्तान ;पपपद्ध भारत–बंग्लादेश ;पअद्ध भारत–श्रीलंका

;द्धि ताशकन्द समझौता कहाँ हुआ था।

;पद्ध इंग्लैंड ;पपद्ध नंस ;पपपद्ध चीन ;पअद्ध कजाकिस्तान

2ण् करगिल युद्ध पर एक संक्षिप्त नोट लिखें।

3 पंचशील के सिद्धान्त पर एक संक्षिप्त नोट कृ लिखें।

4 विश्व में बदलते परिवेश में भारत को अपनी विदेश नीति में क्या परिवर्तन आवश्यक प्रतीत होते हैं और क्यों, कारण सहित उत्तर कृ दें।

पूर्वी पाकिस्तान/बंग्लादेश, 1971

बंग्लादेश का उदय 1971 में भारत के प्रयासों के पफलस्वरूप हुआ पाकिस्तान में हुए चुनाव में पश्चिमी पाकिस्तान में जुल्पफीकार अली भुट्टो की पार्टी को कामयाबी मिली तो पूर्वी पाकिस्तान में शेख मुजीवुर्रहमान की अवामी लीग को। लेकिन पश्चिमी पाक के नेताओं का रवैया पूर्वी पाक के प्रति दूसरे दर्जे जैसा रहा। अवामी लीग एक परिसंघ बनाने की मांग कर रही थी पश्चिमी पाकिस्तान ने मना कर दिया और पाक सेना ने विद्रोही नेता शेख मुजीब को गिरफ्रतार कर लिया परिणामस्वरूप पूर्वी पाक में संघर्ष छिड़ गया। 80 लाख शरणार्थी पाक सेना के व्यवहार से घ ाबड़ाकर भारत में शरण ली। इस प्रकार के पश्चिमी पाकिस्तान के शासकों की भेदभावपूर्ण नीति और सौतेले व्यवहार से पीड़ित होकर पूर्वी पाक ने उनके विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया। भारत ने उसकी मुक्ति में सहायता की और अंततः 1971 के अन्त में बंग्लादेश एक स्वतंत्रा राज्य के रूप में अवतरित हुआ।

तत्कालीन प्रधानमंत्राी शेख मुजीब के शब्दों में, ''भारत और बंग्लादेश की मैत्राी चिरस्थायी है और उसे दुनिया की कोई ताकत तोड़ नहीं सकती।''

3 जुलाई 1972 के जुल्पफीकार अली भुट्टो तथा इन्दिरा जी के मध्य शिमला में समझौता हुआ।

भारत–बंग्लादेश मैत्री सम्बन्ध 19 मार्च, 1972 को दोनों देशों के मध्य 25 वर्षीय मैत्राी संधि हुई भारत ने एक अरब रुपये की सहायता भी दी। स पाक–बंग्लादेश की न्छ में सदस्यता का विरोध करता रहा मगर भारत के प्रयासों से उसे न्छव् की सदस्यता मिल गई।

स 1977 में दोनों देशों के मध्य पफरक्का समझौते के तहत गंगा जल को बढ़ाने तथा विश्व बैंक सहायता से नहर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया गया। स 1991 में महाविनाशकारी तूपफान में भारत ने कापफी सहायता की। स जून 1999 में दोनों देशों के मध्य कलकत्ता–ढाका बस सेवा शुरू की गयी। स एक अक्टूबर 2001 को दोनों देशों के मैत्राी सम्बन्धों पर नजर लग गयी जब खालिदा जिया विजयी हुई उनके आते ही लगभग 40 लाख अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर धार्मिक मतान्धों ने बलात्कार, खून, लूटपाट, उत्पीड़न जैसी घटनाएं घटीं। वहाँ पर अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर पूजा करने पर रोक लगा दी। 27 अक्टूबर 2001 में धार्मिक मतान्धों ने यह घोषित किया कि अल्पसंख्यकों को बंग्लादेश में रहने के लिए कर देना होगा। सबसे घृणित घटना तब घटी जब बंग्लादेश राइपफल्स के द्वारा 16 बीएसएपफ जवानों की निर्मम हत्या कर दी गई। आज भी बंग्लादेश भारत में रह रहे शरणार्थियों को वापस लेने से मना कर रहा है जबकि 20 मिलीयन बंग्लादेशी आज भी अवैध तरीके से भारत में रह रहे हैं। भारत की परमाणु नीति भारत प्रारम्भ से ही एक शान्तिप्रिय देश रहा है और न्छव् में भी विश्वशान्ति के लिए पूरजोर कोशिश करता रहा हैं। तथा दुनिया से शस्त्रोां की होड़ को समाप्त कराने का भरसक प्रयास किया है लेकिन विश्व के कुछ महान परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की दादागीरी तथा पड़ोसी राज्यों से उत्पन्न खतरों ने भारत को अपने परमाणु कार्यक्रम पर विचार करने को विवश कर दिया। जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार है। स 1962 में चीन द्वारा भारत का पराजित होना। स अक्टूबर 1964 में चीन द्वारा नाभिकीय विस्पफोट। स पी–5 को नाभिकीय हथियारों के कारण यूएनओ में स्थायी सदस्यता। स 1971 में पाकिस्तान द्वारा हारने के बाद नाभिकीय शक्ति की खोज में उतरना। स अमेरिका द्वारा पाक को भारी मात्राा में सैनिक समान तथा अन्य सैनिक मदद। उपरोक्त कारणों से भारत को मजबूर होकर नाभिकीय क्षेत्रा में प्रवेश करना पड़ा और सर्वप्रथम 18 मई 1974 को पोकरण में पहला परमाणु विस्पफोट करना पड़ा तथा दूसरी बार 11 व 13 मई 1999 में पुनः श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रधानमंत्राी काल में पाँच विस्पफोट कर भारत ने सम्पूर्ण विश्व को यह एहसास दिला दिया कि भारत की नाभिकीय क्षेत्रा में महारत हासिल कर लिया है। अमेरिका हतप्रभ रह गया कि उसकी जासूसी एजेंसी नाभिकीय विस्पफोट का पता नहीं लगा पायी और आनन–पफानन में उसने भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिया। जिसे 11 सितकृ 2001 के ॅज्ब् पर आक्रमण के तुरंत बाद वापस ले लिया। हमारा पड़ोसी देश चीन भारत की नाभिकीय शक्ति से परेशान हो उठा और सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के प्रश्न पर प्रश्नचिह्न लगा दिया और भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों में शामिल होने से मना कर

दिया। भारत का आज भी यह कहना है कि नामिकीय शक्ति को सिपर्फ शान्तिपूर्ण उद्देश्यों में इस्तेमाल करने की अपनी नीति के प्रति दृढ़ संकल्प है। अनुच्छेद आधारित प्रश्न

1. निम्न अनुच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गुट निरपेक्षता का व्यापक अर्थ है अपने को किसी भी सैन्य गुट में शामिल न करना..............इसका अर्थ होता है चीजों को यथासम्भव सैन्य दृष्टिकोण से न देखना और इसकी कभी जरूरत आन पड़े तब भी किसी सैन्य गुट के नजरिये को अपनाने की जगह स्वतंत्रा रूप से स्थिति पर विचार करना तथा सभी देशों के साथ दोस्ताना रिश्ते कायम करना.........। जवाहर लाल नेहरू...........

;द्ध नेहरू सैन्य गुटों से दूरी क्यों बनाना चाहते थे?

;इद्ध अगर सैन्य गुट न होते तो क्या गुट निरपेक्षता की नीति बेमानी होती?

;बद्ध क्या आप मानते हैं भारत सोवियत मैत्री की संधि से गुट निरपेक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन हुआ? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

2. भारत की परमाणु नीति को विकसित करने के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालें।

3. विश्व शान्ति का प्रेरणा देश भारत ने परमाणु परीक्षण प्रतिबन्ध संधि ;ब्ज्ठज्द्ध पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया कोई दो प्रमुख कारण बताएं।

dk;Zdyki (Working Sheet)

फ० 1० ;द्ध ब्ज्ठज का पफुलपफार्म बताएँ। ;इद्ध छ।ड का पफुलपफार्म बताएँ। ;बद्ध ॅज्व का पफुलपफार्म बताएँ। ;कद्ध ताशकन्द समझौता कब हुआ। ;2 अंकद्ध

प्र2० ;द्ध भारत–चीन के बीच सीमा रेखा...............नाम से जानी जाती है।

;इद्ध भारत–पाक के बीच सीमा रेखा..........के नाम से जानी जाती है। ;बद्ध भारत द्वारा प्रथम परमाणु विस्पफोट राजस्थान के.........……स्थान पर किया गया। ;कद्ध ....ने कश्मीर रियासत का विलय भारत में कर दिया। ;2 अंकद्ध

प्र3० मेल बनाएँ :

;द्ध 1950–64 के दौरान भारत की ;पद्ध तिब्बत के धार्मिक नेता जो सीमा पार करके भारत विदेश नीति आए।

;इद्ध पंचशील ;पपद्ध क्षेत्रीय अखंडता और प्रभुसत्ता की स्थापना तथा आर्थिक विकास

;बद्ध बाडुंग सम्मेलन ;पपपद्ध शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व

;कद्ध दलाई लामा ;पअद्ध इसकी परिणति गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के रूप में हुई।

प्र4० सही गलत का निशान लगाएँ। ;2 अंकद्ध

;द्ध भारत–चीन युद्ध 1971 में हुआ था। ;इद्ध 1971 के भारत पाक युद्ध में भारत के दो टुकड़े हो गए। ;बद्ध 1974 में भारत ने पहला परमाणु विस्पफोट किया। ;कद्ध भारत पाक के बीच ताशकन्द में समझौता हुआ था।

प्र5० निम्न प्रश्नों के उत्तर दें। ;4 अंकद्ध

;द्ध गुट निरपेक्ष आन्दोलन का पहला सम्मेलन कहाँ हुआ था?

;इद्ध 11 व 13 मई 1999 में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण कहाँ किया गया?

;बद्ध पंचशील सिद्धान्त पर 29 अप्रैल 1954 को किन दो देशों के मध्य समझौते हुए?

;कद्ध शिमला समझौता किन दो देशों के बीच किया गया?

प्र6० कश्मीर मुद्दा भारत–पाक के बीच रोड़ा बना हुआ है क्या आप इस बात से सहमत हैं?

प्र7० पंचशील समझौता एक बड़ी भूल थी क्या आप इस बात से सहमत हैं अपने पक्ष/विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करें।

अथवा

दो ध्रुवों की समाप्ति के बाद गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता पर अपना पक्ष प्रस्तुत करें।

4

nks /kzqoh;rk dk vUr

(End of Bipolarity)

परिचयµजैसाµकिµहमµपिछलेµअध्यायµमेंµयहµपढ़µचुकेµहैंµकिµदुनियाµदोµध्रुवोंµगुटोंद्धµमेंµबंटकरµआपसीµसंघर्ष कीµबुनियादµपरµखड़ीµथी।µएकµतरपफµअमेरिकीµगुटµतोµइसकीµतरपफµसोवियतµगुट। दोनोंµकेµमध्यµवैचारिक भिन्नताµनेµदुनियाµपरµमेंµआधुनिकतमµहथियारोंµकीµखोजµऔरµएकµदूसरेµसेµज्यादाµशक्तिशालीµबननेµकीµहोड़ नेµदुनियाµकोµदो ध्रुवोंµमें विभक्तµकरµदियाµलेकिनµएकµऐसाµसमयµभी आयाµजबµदूसराµगुटµसोवियतµसंघद्ध धराशायीµहोनेµकेµकगारµपरµआµगया।µnjvlyµlu~µ1945µesaµfe=kµjk"Vªksaµ(USA,µUSSR,µBritain,µFrance)µrFkkµèkqjh jk"Vªksaµ(teZuhµbVyh]µtkiku)µdsµeè;µ;q)µpyµjgkµFkkµgkyk¡fdµvUrr%µvkReleiZ.kµdjusµghµokykµFkkµfdµvesfjdkµviusµvkidks loZ'kfDrekuµfn[kkusµdsµpDdjµesaµtkikuµdsµnksµ'kgjksaµ(fgjksf'kek&ukxklkdh)µijµijek.kqµceµlsµizgkjµdjµfn;kµiwjhµnqfu;kµesa gkgkdkjµepµx;kAµvesfjdkµvkSjµlksfo;rµla?kµegk'kfDrµcuusµdhµgksM+µesaµ,dµnwljsµdsµeqdkcysµ[kM+sµgksµx;sµftllsµ'khrµ;q) vkjEHkµgksµx;kAµftldsµvUrxZrµif'pehµ;wjksiµdsµvfèkdrjµns'kksaµusµvesfjdkµdkµlkFkµfn;kµD;ksafdµogk¡µiw¡thoknhµO;oLFkk dk;eµFkhµrksµnwljhµrjiQµiwohZ

यूरोप सोवियत खेमे में शामिल हो गया। यही पूँजीवादी व साम्यवादी खेमें सैनिक गुटबाजी में भी शामिल हो गये जैसा कि हम जानते हैं कि एक तरपफ अप्रैल 1949 में छवतजी ।ससंदजपब ज्तमंजल व्तहंदपेंजपवद अर्थात छ।ज्व की स्थापना हुई तो दूसरी तरपफ 1955 में बारसा संधि ;ॅंतेंू ज्तमंजलद्ध नामक सैनिक गुट की स्थापना हुई। पिछले अध्याय में हम यह थी जान चुके है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के 15 वर्षों में जहाँ हथियारों की होड़ लगी रही तथा ऐसी सम्भावनाएं बनती रही कि कहीं तृतीय विश्व युद्ध न हो जाये ऐसी परिस्थिति में तृतीय विश्व की आशंका ने हथियारों की होड़ पर प्रतिबन्ध की सुगबुगाहट भी होने लगी और 1960 के दशक के उत्तरार्ध में दोनों गुटों के मध्य हथियारों पर नियंत्राण की प्रक्रिया भी शुरू हो गयी। जैसा कि पूर्व अध्याय में पढ़ चुके हैं।

;पद्ध सीमित परमाणु परीक्षण संधि ;स्ज्ठद्ध ।नह 1963 मास्को

;पपद्ध परमाणु अप्रसार संधि ;छच्ज्द्ध श्रनसल 1968 वाशिगटन–मास्को लन्दन

;पपपद्ध सामरिक अस्त परिसीमन वार्ता–1ै;स्ज्.प्द्ध 26 मई 1972 रिचर्डनिक्सन।

;पअद्ध सामरिक असत न्यूनीकरण–1ै;ज्ंत्ज.प्द्ध 31 जुलाई, 1991 जार्जबुश–गोर्वाचेव

;अपद्ध सामरिक अस्त न्यूनीकरण–2ै;ज्ंत्ज.प्प्द्ध 3 जनवरी, 1993 मास्को–जार्जबुश–येल्तसिन

वर्लिन की दीवार μ जैसा कि हम जानते है कि वर्लिन की दीवार जर्मनी को दो टुकड़ों में विभक्त करती है। ;पद्ध पश्चिमी जर्मनी ;पपद्ध पूर्वी जर्मनी। यह दीवार पूँजीवादी गुट एवं साम्यवादी गुटों के बीच की दीवार थी क्योंकि पश्चिमी जर्मनी पर अमेरिकी गुट तथा पूर्वी जर्मनी पर साम्यवादी गुट ने अपने–अपने कब्जे में ले लिया। 150 किमी॰ लम्बी दीवार 1961 में बनी जिसे 9 नवम्बर 1989 में तोड़ दिया गया। यही वर्लिन की दीवार का बनना शीत युद्ध का चरम बिन्दु माना जाता रहा है और इसका गिरना दूसरी दुनिया का पतन बर्लिन की दीवार का गिरना यूरोप में यह एक नाटकीय घटना भी जिसका परिणाम यह निकला कि μ

;पद्ध दोनों जर्मनी का एकीकरण हो गया।

;पपद्ध पूर्वी यूरोप के साम्यवादी आठों देशों ने स्वयं को साम्यवादी व्यवस्था से अलग कर लिया। इस प्रकार देखते–देखते साम्यवादी युग अन्ततः कमजोर पड़ने लगा।

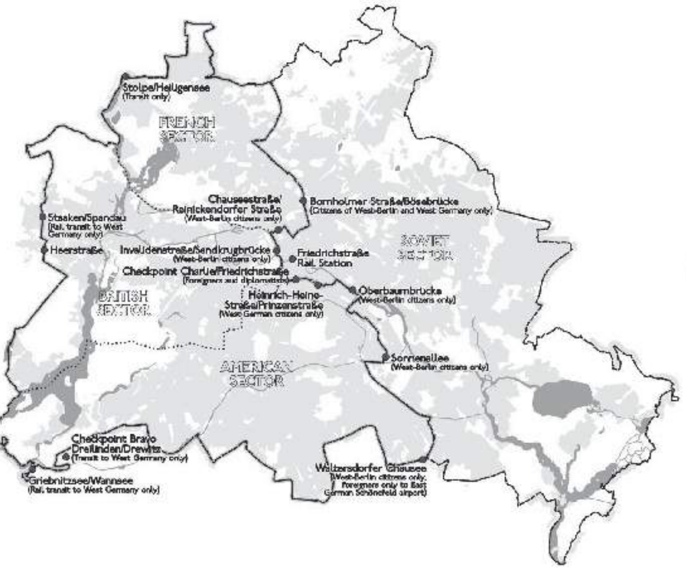

क्या आप जानते हैं?

;पद्ध छ।ज्व ;पूंजीवादीद्ध देशों में नाम = अमेरिका, ब्रिटेन, नंस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, नार्वे, डेनमार्क नीदरलैंड, ग्रीस, तुर्की, कनाडा, आइलैंड, स्पेन तथा वेल्जियम

;पपद्ध वारसा ;साम्यवादीद्ध देशों के नाम ‱ पोलैंड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लावकिया, हंगरी, रोमानिया, वुल्गारिया आदि।

;पपपद्ध बाल्कान राज्य : बाल्कान प्रायद्वीप वे क्षेत्रा हैं जो तीन ओर समुद्र से घिरे हैं इसके पूर्व में काला सागर, दक्षिण पश्चिम में भूमध्य सागर स्थित है। प्रमुख देश μ अल्वनिया, वोसनिया तथा हर्जेगोविना, बुल्गारिया, क्रोशिया, मान्टेनिग्रो, यूनान, मेसेडोनिया, सर्बिया, टर्की आदि

;पअद्ध केन्द्रीय एशियाई देश : कजाकिस्तान, ताजकिस्तान, उजवेकिस्तान, किरगिस्तान, तुर्की आदि।

;अद्ध पेरेस्त्रोइका अर्थात 'पुनर्रचना' ग्लोस्तनोस्त अर्थात 'खुलापन' ये दोनों नीतियाँ ‱ के तत्कालीन राष्ट्रपति मिखाइल गोर्वोचेव द्वारा चलायी गयी जिसके परिणामस्वरूप साम्यवादी व्यवस्था का पतन एवं गणराज्यों के विघटन तथा लोकतान्त्रिक पूंजीवादी व्यवस्था का जन्म हुआ।

;1द्ध मिखाइल गोर्वाचेव–सोवियत संघ के अंतिम राष्ट्रपति ;2द्ध बोरिस येल्तसिन μ रूस के पहले राष्ट्रपति

उपलब्धियाँ μ

;1द्ध आर्थिक तथा राजनीतिक सुधारों की पहल ;2द्ध हथियारों पर रोक की पहल ;3द्ध अपफगानिस्तान से सेना वापसी ;4द्ध जर्मनी के एकीकरण में सहायक ;5द्ध शीत युद्ध की समाप्ति पर पहल ;6द्ध लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का शंखनाद

सोवियत संघ का विघटन सोवियत साम्यवादी गुट अमेरिकी पूंजीवादी गुट के विरुद्ध था। सोवियत प्रणाली ने राज्य और पार्टी की संस्था को प्राथमिकता दी सोवियत संघ में कम्यूनिस्ट पार्टी का बोलबाला था, अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध थी और पूर्णरूप से राज्य के अधीन थी परिणाम स्वरूप सोवियत प्रणाली पर नौकरशाही हावी होती गई। आम नागरिकों का जीवन जीना दूभर होता चला गया, सत्ता पर काविज लोगों ने अपना वर्चस्व जमा किया था। 15 गणराज्यों का सोवियत संघ जिस पर रूस का दबदबा बना हुआ था तथा अन्य क्षेत्रों की जनता प्रायः उपेक्षा की शिकार होती रही। सोवियत संघ अपने नागरिकों की राजनीतिक तथा आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रहा था। ऐसी स्थिति में सोवियत संघ की बागडोर मिखाइल गोर्वाचेव के हाथों में आ गयी। गोर्वाचेव ने

आर्थिक–राजनीति सुधारों के साथ–साथ लोकतान्त्रिाक व्यवस्था कायम करने की नीति अपनायी जिसका विरोध कम्यूनिस्ट पार्टी ने विरोध किया परिणामस्वरूप 1991 में सत्ता पलट गयी। वोरिस येल्तसिन ने सत्ता परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने केंद्रीकृत नियंत्राण को मानने से इनकार कर दिया परिणामस्वरूप 1991 में ै के तीन बड़े गणराज्य रूस, ग्रूकेन और वेलारूस ने ै से समाप्ति की घोषणा कर दी और पार्टी पर प्रतिबन्ध लगाकर एक पूंजीवादी लोकतान्त्रिाक व्यवस्था को अपना लिया।

उपरोक्त दोनों मानचित्राों को ध्यानपूर्वक देखें पहले मानचित्रा को दो रंगों में दर्शाया गया है। मानचित्रा देखकर सोवियत संघ व अमेरिकी गुट में शामिल देशों के नाम बताएं साथ ही छ।ज्व् एवं वारसा गुटों के देशों में नाम बताएं। मानचित्रा दो का ध्यानपूर्वक देखें तथा मानचित्रा के आधार पर राष्ट्रकूल के देशों के नाम बताएं साथ ही मध्य एशियाई देशों को चिन्हित करें। मानचित्रा को आधार मानकर सोवियत गणराज्यों के नामों का उल्लेख करें।

ै के विघटन के कारण जैसा कि हम जानते है कि वर्लिन की दीवार का गिरना सोवियत संघ के पतन का शिलान्यास माना जाता है लेकिन विघटन के अनेक कारण जिम्मेदार हैं जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं।

;1द्ध एक दलीय व्यवस्था का प्रभुत्व ;2द्ध औद्योगिकी में पश्चिमी देशों की तुलना में पिछड़ापन ;3द्ध आर्थिक विपफलताएँ
;4द्ध राजनीतिक लोकतंत्रा को नकारना ;5द्ध पश्चिमी राष्ट्रों से ै की तुलना

;6द्ध गोर्वाचेव की नीतियाँ ;ग्लोस्तनोस्त एवं पेरेस्त्रोइकाद्ध ;7द्ध पश्चिमी देशों की भूमिका ;8द्ध ै का प्रशासनिक एवं राजनीतिक रूप से गतिरूद्ध हो जाना

;9द्ध ै की अर्थव्यवस्था में निजी सम्पत्ति की अवधारणा का अभाव

;10द्ध उत्पादन तथा वितरण के सभी साधनों पर राज्य का वर्चस्व ;अधीनताद्ध

उपरोक्त वजहों से जनता पर नौकरशाही का दबदबा बनता चला गया दूसरी तरपफ हथियारों की होड़ के कारण ै को भारी कीमत चुकानी पड़ी अर्थात ै प्रौद्योगिकी एवं बुनियादी ढांचे के क्षेत्रा में पश्चिमी देशों के मुकालबे पीछे चला गया। साथ ही उत्पादकता घटने के कारण उपभोक्ता वस्तुओं की कमी के परिणामस्वरूप खाद्यान्न आपात बढ़ने लगा इस प्रकार ै की अर्थव्यवस्था चरमराने लगी। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि गिरती हुई अर्थव्यवस्था प्रशासन की तानाशाही एवं बढ़ता भ्रष्टाचार आदि के कारण ै पतन के रास्ते पर आ गया उसी दौरान अर्थात 1980 के दशक में मिरवाइल गोर्वाचेव ै के कम्यूनिस्ट पार्टी के महासचिव बने। मिखाइल गोर्वाचेव ने ै की आर्थिक एवं राजनैतिक दशा सुधारने हेतु कुछ कठोर कदम उठाने शुरू किए जैसे ;पद्ध पश्चिमी देशों से बेहतर सम्बन्ध सुधारने, ;पपद्ध अर्थव्यवस्था को गति देने तथा

;पपपद्ध लोकतान्त्रिाक प्रक्रिया पर बल देने की बात की। परिणामस्वरूप सोवियत खेमें के पूर्वी यूरोप के गणराज्य सोवियत व्यवस्था के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर दी। मार्च, 1990 में सर्वप्रथम लिथुआनिया गणराज्य ने अपनी स्वतन्त्राता की घोषणा कर दी। जून 1990 में रूसी संसद ने भी आजादी की घोषणा कर दी उधर 1991 में ै में एक जबरदस्त राजनीतिक भूचाल आया और गोर्वाचेव को अपदस्थ कर दिया गया तथा वोरिस येल्तसिन सत्ता पर काविज हो गये। लोकतान्त्रिाक प्रक्रिया का एक नया रूप तब सामने आया जब सितम्बर, 1991 में लिथुआनिया लताविया और एस्तोनिया तीनों गणराज्य न्छव के सदस्य बन गये। उधर दिसम्बर 1941 में रूस, मिखाइल, व उक्रेन ने स्वतंत्रा राष्ट्रों का राष्ट्रकूल बनाया जिसमें कजाकिस्तान किरगिस्तान, तजाकिस्तान, तुर्वफमेनिस्तान, अज़रवैजान, उज़बेकिस्तान, माल्दोवा, अर्मेनिया और जर्जिया शमिल हो गये। 25 दिसम्बर 1991 को गोर्वाचेव ने राष्ट्रपति पद से इस्तीपफा दे दिया इस प्रकार ै का अन्त हो गया।

रिक्त स्थान भरो।

;पद्ध पहली दुनिया का अग्रणी देश.............

;पपद्ध दूसरी दुनिया का अग्रणी देश.............

;पपपद्ध सोवियत संघ का पतन सन्................

;पअद्ध सोवियत संघ से आजादी पाने वाला प्रथम राष्ट्र..........

;अद्ध सोवियत संघ का उत्तराधिकारी देश...........

;अपद्ध ै से अलग उन देशों के नाम जो 1991 में न्छव के सदस्य बने।..................

उत्तरµ;पद्धµै।µ;पपद्धµैµ;पपपद्धµ1991µ;पअद्धµलिथुआनियाµ;अद्धµरूसµ;अपद्धµलिथुआनिया,µएस्तोनिया,µलातबिया

ैन् विघटन का प्रभाव :

सोवियतµसंघµकेµपतनµकाµविश्वµराजनीतिµपरµनिम्नµप्रभावµपड़ाµ

;पद्ध दो ध्रुवीयता का अन्त ;पपद्ध एक ध्रुवीय विश्व का बनना/ैन्। की सर्वोच्चता

;पपपद्ध हथियारों की होड़ की समाप्ति ;पअद्ध शीत युद्ध की समाप्ति ;अद्ध नये देशों का उदय ;15 गणराज्यद्ध

साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण एवं शॉक थेरेपी

;पद्धमुझे आघात तो दीख रहा है परन्तु उपचार कहाँ है? आखिर हम इतने बड़े–बड़े जुमलों में क्यों बोलते हैं?

;पपपद्ध आखिर राष्ट्रवाद और अलगाववाद में अन्तर क्या है?

यदि आप कामयाब हो जाते हैं तो आप राष्ट्रीय नायक कहलाते हैं परन्तु यदि नाकामयाब रह जाते हैं तो आप अलगाववाद पफैलाने के अपराधी ठहराए जाते हैं। सोवियत संघ के पतन के बाद संघ के गणराज्यों में जहाँ समाजवादी सत्ता का पतन हुआ वहीं इसके धराशायी होने के साथ–साथ लोकतान्त्रिाक पूँजीवाद की ओर अग्रसर होते गये। क्योंकि अलग हुए गणराज्य सोवियत संघ के दौर की समूची संरचनात्मक व्यवस्था से ही छुटकारा पाना चाहते थे इन परिस्थितियों में संक्रमण के इस काल में विश्व बैंक ;ॅवतसक ठंदाद्ध तथा प्दजमतदंजपवदंस डवदमजंतल थ्नदक द्वारा निर्देशित ''शॉक थेरेपी'' अर्थात ''आघात पहुँचाकर उपचार करना'' नाम दिया गया।

विशेषताएँµ

;1द्ध राज्य स्वामित्व के स्थान पर निजी स्वामित्व ;2द्ध निजीकरण को प्रोत्साहन ;3द्ध सामूहिक पफार्म की जगह निजी पफार्म

;4द्ध राज्य नियन्त्रित समाजवाद की जगह पूँजीवाद ;5द्ध मुक्त व्यापार को अपनाना

परिणामµ

ऽ शॉक थेरेपी अपने उद्देश्य में विपफल	ऽ शॉक थेरेपी से सम्पूर्ण इलाके की अर्थव्यवस्था तहस–नहस	ऽ निजी उद्योगों एवं कम्पनियों को बेचा जाना ;परिणामस्वरूप उद्योगों का पतन क्योंकि औने पौने दामों में बेचा गयाद्ध	ऽ खाद्यान्नों की कमी	ऽ सकल घरेलू उत्पाद का गिरना	ऽ व्यापारिक ढांचे का पूरी तरह ध्वस्त होना	ऽ मुद्रास्पफीति का बढ़ना	ऽ आर्थिक असमानता	ऽ समाज कल्याण तथा सरकारी रियायतों की समाप्ति की वजह से गरीबी का प्रकोप बौधिक क्षमता का पलायन	ऽ समाज का दो वर्गों के विभाजित होना ;अमीर–गरीबद्ध

अभ्यासगत प्रश्न

;1द्ध शॉक थेरेपी से आप क्या समझते हैं?

;2द्ध विश्व बैंक एवं प्डथ् द्वारा निर्देशित व्यवस्था को किस नाम से जानते हैं?

;3द्ध शॉक थेरेपी द्वारा उत्पन्न किन्हीं चार नकारात्मक प्रभावों की चर्चा करें। ;4द्ध क्या शॉक थेरेपी अपने उद्देश्यों में सपफल रही पक्ष/विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करें।

पूर्व साम्यवादी देश और भारत के बीच रिश्ते जैसा कि हम जानते हैं कि पूर्व सोवियत संघ और भारत के मध्य अटूट रिश्ते रहे हैं। शीतयुद्ध के दौरान जब दुनिया दो गुटों में बंटी थी ऐसा माना जा रहा था कि भारत सोवियत गुट का ही एक अंग है। एक कहावत प्रचलित थी कि, ष्प्दकपं पे ष्ैंजमससपजम सपहीज वि त्नेपंण् ''भारत सोवियत रूस का पिछलग्गू देश है।'' इससे यह प्रकट होता है कि दोनों मध्य रिश्ते अटूट रहे हैं। सोवियत संघ सदैव भारत की तरपफदारी करता रहा है और विशेष अवसरों पर भारत का खुला पक्ष लिया है। चाहे न्छव् के अन्दर की बात हो या भारत–पाक युद्ध ;1971द्ध कारगिल युद्ध ;1999द्ध।

हम यह भी जानते हैं कि कश्मीर मुद्दे पर सोवियत संघ और अब रूस ने खुलकर साथ दिया है। विभिन्न क्षेत्राों में उसका सहयोग सराहनीय रहा है। आर्थिक क्षेत्रा में भिलाई स्टील प्लांट व वोकारों स्टील प्लांट की स्थापना में सहयोग तथा ठभ्म्स् में भी इसका सहयोग सराहनीय रहा है। सैन्य क्षेत्रा मेंµभारत में मौजूद सैन्य साज–समाज तथा टेकनालाजी सोवियत संघ से ही प्राप्त की गई

है। भारतीय वायु सेना में मौजूद ड1 सीरीज के हेलीकाप्टर, ड्फ्ळ सीरीज के सभी लड़ाकू विमान ;ड्फ्ळकृ 21ए23ए25ए27ए31द्ध मालवाहक विमान 1स्:76ए 1स्:78 की आपूर्ति भी वही से है। आरटीलरी गन्स, बख्तरबन्द गाड़ियाँ व अन्य सैनिक साज सामान सोवियत रूस से ही प्राप्त किया जाता रहा है और आप भी रूस से कापफी बेहतरीन सम्बन्ध है। सोवियत संघ के विघटन के बाद भी रिश्तों में किसी प्रकार का खटास नहीं आया है बल्कि आज भी रूस भारत का सबसे करीबी देश है। आज भी रूस के लिए भारत सबसे बड़ा खरीददार देश है। रूस ने तेल संकट के समय भारत की सहायता की। ऊर्जा के क्षेत्रा में भी कापफी सहयोग कर रहा है।

भारत के लिए सभी बड़ी सपफलता क्रायोजनिक राकेट की प्राप्ति है जिसकी वजह से भारत अंतरिक्ष के क्षेत्रा में कापफी आगे बढ़ चुका है। आज भारत विभिन्न विकासशील देशों की सेटेलाइटों का प्रक्षेपण अपनी भूमि से कर रहा है और विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है। जिस समय क्रायोजनिक राकेट के लिए करार चल रहा था, अमेरिका ने रूस को इंजन न देने की सलाह दी परन्तु इस बात की परवाह किए बिना रूस ने हमें क्रायोजनिक इंजन की आपूर्ति कर दी। आज रूस भारत की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यत के लिए अपनी प्रतिबद्धता जता रहा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दोनों के मध्य गहरे रिश्ते हैं और इसे दुनिया की कोई ताकत कमजोर नहीं बना सकती। अभ्यासगत प्रश्न :

;1द्ध ॅील ूमतम च्तवेचमतवने चंतजे वा िवअपमज नदपवद कपेंजपेपिमक ूपजी पजघ

;2द्ध ॅील ूमतम मबवदवउपब तमवितउेए दमबमेंतल पद श्न्ेेप्ह

;3द्ध ॅींज ूमतम जीम ब्वदेमुनमदबमे ा िश्न्ेे कपेमदजमहतंजपवद वद ूवतसक च्वसपजपबेघ

;4द्ध भ्वू बंद प्दकपं हमज इमदमपिजमक इल त्नेपंद तिपमदकेीपचघ

;5द्ध म्गंउपउम जीम वितमपहद च्वसपबल वा िप्दकपंए ॅीवसक प्दकपं बवदबमदजतंजम जवूंतके श्ने। पदेजमंक वा िजीम जतंकपजपवदंस तिपमदक त्नेपं

dk;Zdyki (Working Sheet)

1. निम्न प्रश्नों का उत्तर दें। ;2 अंकद्ध

;द्ध श्न्े पफुलपफार्म बताएं। ;इद्ध सोवियत संघ अस्तित्व में कब आया?

;बद्ध सोवियत संघ का विघटन कब हुआ? ;कद्ध गोर्वाचेव ने राष्ट्रपति पद से इस्तीपफा कब दिया?

2. रिक्त स्थान भरें। ;2 अंकद्ध

;द्ध .... का गिरना शीत युद्ध के अन्त का प्रतीक था।

;इद्ध .... में वोरिस येल्तसिन रूस के राष्ट्रपति बने।

;बद्ध .... को आघात पहुँचाकर उपचार करना कहा जाता है।

;कद्ध .... को सोवियत संघ के विघटन के बाद उत्तराधिकारी स्वीकार किया गया है।

3. मेल बनाएँ : ;2 अंकद्ध

;द्ध नाटो सोवियत गुट

;इद्ध वारसा अमेरिकी गुट

;बद्ध पूँजीवादी अर्थव्यवस्था सोवियत संघ

;कद्ध साम्यवादी अर्थव्यवस्था अमेरिकी गुट

4. सही गलत का निशान लगाएँ। ;2 अंकद्ध

;द्ध सोवियत संघ में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व था।

;इद्ध वर्लिन की दीवार श्न्े। व कनाडा के मध्य स्थित थी।

;बद्ध सोवियत संघ के पतन का कारण गोर्वाचेव की नीतियाँ रही।

;कद्ध शाक–थेरेपी अपने मिशन में असपफल रहा।

5. एक शब्द में उत्तर दे। ;4 अंकद्ध

;द्ध दूसरे विश्व युद्ध के बाद कौन सा देश एक महाशक्ति के रूप में उभरा?

;इद्ध सोवियत राजनीतिक प्रणाली के केन्द्र में किस पार्टी का वर्चस्व रहा?

;बद्ध शीत युद्ध के दौरान अमेरिकी गुट का विरोधी गुट कौन था?

;कद्ध दो ध्रुवीयता का आशय बताए।

6. सोवियत संघ का पतन क्यों हुआ तीन कारण बताए। ;3 अंकद्ध

7.गोर्वाचेव द्वारा लाए गये दो सुधारों का उल्लेख करते हुए यह बताए कि इसका सोवियत संघ पर आर्थिक व राजनीतिक रूप में क्या प्रभाव पड़ा? ;5 अंकद्ध

5

lkekftd U;k; dh LFkkiuk

सामाजिक न्याय की स्थापना प्राचीन काल से ही राजनीतिक चिन्तन का महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। परम्परागत दृष्टिकोण के अन्तर्गत मुख्यतः न्यायपूर्ण व्यक्ति के स्वरूप पर विचार करते समय उसमें सद्गुणों की खोज की जाती थी। जो व्यक्ति को न्यायपरायण बना देते थे। जहाँ परम्परागत दृष्टिकोण का मुख्य सरोकार व्यक्ति के चरित्रा से था, वहीं आधुनिक दृष्टिकोण का मुख्य सरोकार सामाजिक न्याय से है। सामाजिक न्याय की संकल्पना स्वतन्त्राता, समानता और बन्धुता के आदर्शों में समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न है। प्राचीन भारतीय समाज में न्याय धर्म के साथ जुड़ा था तथा धर्म और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था कायम करना राजा का प्रमुख कर्तव्य था। आज के युग में न्याय की मुख्य समस्या है कि सामाजिक जीवन के अन्तर्गत विभिन्न व्यक्तियों या समूहों के प्रति वस्तुओं, सेवाओं, अवसरों, लाभों, शक्ति और सम्मान के साथ–साथ दायित्वों और बाध्यताओं के आवंटन का उचित आधार क्या होना चाहिए?

न्याय शब्द की उत्पत्ति एवं परिभाषा न्याय शब्द अंग्रेजी भाषा के जस्टिस ;श्रनेजपबद्ध शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है जो लैटिन भाषा के श्रने शब्द से बना है जिसका अर्थ है बन्धन अथवा बांधना इस प्रकार न्याय समाज की एक जटिल अवधारण के रूप में स्थापित हुआ। न्याय को परिभाषित करते हुए विद्वानों ने कहा है किμ

जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कॉण्ट के अनुसारμ''हर मनुष्य की गरिमा होती है। अगर सभी व्यक्तियों की गरिमा स्वीकृत है, तो उनमें से हर एक का प्राप्य यह होगा कि उनमें से प्रत्येक को अपनी प्रतिभा के विकास और लक्ष्य की पूर्ति के लिए अवसर प्राप्त हों।''

सालमण्ड के अनुसारμ''न्याय का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को उसका भाग प्रदान करना है।''

कन्फ्रयूशस के अनुसारμ''गलत करने वाले को दण्डित करना और श्रेष्ठ लोगों को पुरस्कृत करना ही न्याय की स्थापना है।''

पाश्चात्य चिन्तन में न्यायμयूनानी दार्शनिक प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' में सुकरात की द्वन्द्वात्मक पद्धति की चर्चा करते हुए न्याय की स्थापना के कुछ तर्क स्थापित किए। प्लेटो के अनुसार यूनान में न्याय के

तीन रूप विद्यमान थे, इन तीनों रूपों या अवधारणाओं को इस प्रकार समझा जा सकता है। एक बार सुकरात ने अपने शिष्यों को न्याय के बारे में पूछा तो उनके उत्तर इस प्रकार थे।

न्याय के सिद्धान्त प्रतिपादक प्रतिपादित विषय

;1द्ध परम्परावादी सिपफलिम तथा पोलिमार्कस अपना कर्ज चुकाना तथा शत्राु के साथ शत्राुता और मित्रा के साथ मित्राता न्याय है।

;2द्ध उग्रवादी सिद्धान्त थ्रेसीमेकस शक्तिशाली का हित ही न्याय है। ;3द्ध अनुभववादी सिद्धान्त ग्लॉकान दुर्बल का हित ही न्याय है।

प्लेटो ने तीनों सिद्धान्तों का खण्डन करते हुए न्याय शब्द का प्रयोग नैतिक अर्थ में किया था। उन्होंने न्याय के दो रूपों का उल्लेख किया।

;1द्ध व्यक्तिगत न्याय ;2द्ध सामाजिक न्याय

न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए प्लेटो ने नागरिकों के तीन वर्ग बताए तथा मनुष्यों के व्यवहारों को भी तीन वर्गों में विभाजित किया जो इस प्रकार है।

मनुष्य के व्यवहार के इन्द्रिय तृष्णा शौर्य बुद्धिमत्ता तीन मुख्य ड्डोत

नागरिकों के तीन वर्ग	उत्पादक वर्ग	सैनिक वर्ग	शासक वर्ग
मूल सद्गुण	संयम	साहस	ज्ञान
शासन के स्वरूप	लोकतन्त्रा	सैनिक तन्त्रा	राजतन्त्रा

प्लेटो के अनुसार राज्य के सन्दर्भ में न्याय का अर्थ यह होगा कि संयम शील उत्पादक वर्ग को साहसी सैनिक वर्ग का संरक्षण प्राप्त हो और इन दोनों को बुद्धिमत्ता–सम्पन्न दार्शनिक वर्ग से मार्गदर्शन प्राप्त हो–यही कारण है कि प्लेटो ने न्यायसिद्धान्त के अन्तर्गत दार्शनिक वर्ग के शासन का समर्थन किया और सैनिक वर्ग तथा उत्पादक वर्ग को अपने–अपने स्वभाव के अनुरूप भूमिकाएँ सौंपी गयी हैं जिन्हें अपने–अपने लिए उपयुक्त सद्गुणों का आचरण करते हुए दार्शनिक शासकों के नियन्त्राण में रहने का निर्देश दिया गया है। प्लेटो का विचार है कि ज्ञान के आलोक के बिना समाज अन्धकार में भटक जाएगा। यदि शासन की बागडोर दार्शनिकों के हाथों में नहीं दी जाएगी तो उत्पादक वर्ग की अनियन्त्रित लालसा और सैनिक वर्ग का अनियन्त्रित भावावेग समाज को विध्वंस की ओर ले जाएगा। जिस देश के शासक ज्ञान विज्ञान के प्रति अनुरक्त नहीं होंगे या जहाँ दौलत के भूखे व्यापारी अथवा युद्ध के प्यासे सैनिक सत्ता का सूत्रा संभाल लेंगे, उस देश का शासन भ्रष्ट, अस्थिर और विनाशकारी होगा। जब तक राजनीति में अयोग्य और धूर्त लोगों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाएगा, तब तक राज्य की बुराइयों, राजनीतिक अस्थिरता, अव्यवस्था और कुप्रबन्ध का अन्त नहीं हो पाएगा। जब तक दार्शनिक शासक नहीं बन जाते और संसार के शासक दर्शनशास्त्रा पर अधिकार प्राप्त नहीं कर लेते तब तक राज्यों को अपनी बुराइयों से मुक्ति नहीं मिल पाएगी। प्लेटो के न्याय की व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है कि न्याय का तात्पर्य निष्पक्ष रूप से अपने कर्तव्यों का

पालन करना है। किन्तु भूमण्डलीकरण के इस युग में प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थिति में परिवर्तन के कारण न्यायपूर्ण वितरण की समस्या उभर आयी है और पूँजीवादी समाज में अमीर और गरीब के बीच की खाई गहरी होती जा रही है। इसे समाधान के लिए जॉन रॉल्स नामक विद्वान ने अपनी पुस्तक 'ए थ्योरी ऑपफ जस्टिस' ;। जैमवतल वि्श्रनेजपबमद्ध में वितरणात्मक न्याय का सिद्धान्त विकसित किया।

जॉन रॉल्स का न्याय का सिद्धान्त ;त्नसससे जैमवतल वि्श्रनेजपबमद्ध

न्याय की समस्या प्राथमिक वस्तुओं के वितरण की समस्याμरॉल्स के अनुसार प्राथमिक वस्तुएं है, अधिकार और स्वतन्त्राताएं, शक्तियाँ और अवसर आय और सम्पदा तथा आत्मसम्मान के साधन। रॉल्स ने अपने न्याय को शुद्ध प्रक्रियात्मक न्याय की संज्ञा दी उसने उपयोगितावाद का खण्डन किया। रॉल्स के अनुसारμ''सुखी लोगों के सुख को कितना ही क्यों न बढ़ा दिया जाए किन्तु उससे दुःखी लोगों के दुःख का हिसाब बराबर नहीं किया जा सकता'' अतः उपरोक्त प्राथमिक वस्तुओं का वितरण न्यायपूर्ण हो जिसमें सामान्यतः कोई छूट तभी दी जा सकती है जब यह सिद्ध हो जाए कि इससे निम्नतम व्यक्ति को अधिकतम लाभ सम्भव होगा। रॉल्स की सामाजिक अनुबन्ध की तर्क प्रणाली तथा अज्ञानता के आवरण का सिद्धान्तμरॉल्स ने न्याय की सर्वसम्मत और विश्वव्यापी काल्पनिक तर्क प्रणाली का सहारा लेते हुए कहा कि मानो मनुष्य अज्ञान के पर्दे के पीछे बैठे है। जिससे मनुष्य अपनी आवश्यकताओं, हितों, निपुणताओं, योग्यताओं आदि से बिल्कुल बे खबर होते है। वे यह भी भी नहीं जानते कि वास्तविक समाज में कौन–कौन सी बातें संघर्ष पैदा करती हैं। यदि उन्हें यह पता भी हो कि श्वेत या अश्वेत है तो इससे कोई पफर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि उन्हें समाज में बरते जाने वाले भेदभाव का पता नहीं होगा परन्तु उन्हें अर्थशास्त्रा और मनोविज्ञान का आरम्भिक ज्ञान होगा और न्याय का बोध भी होगा। अज्ञानता के पर्दे के पीछे नैतिकता के विचार से जुड़े कुछ प्रतिबन्ध अवश्य लगे होंगे। रॉल्स ने मूल स्थिति के इन मनुष्यों को 'विवेकशील कर्ता' की संज्ञा दी है, जो न्याय के नियमों का पता लगाने के लिए तथा परस्पर सहमति पर पहुँचने के लिए एकत्रित हुए हैं। उनका सरोकार अपने–अपने लिए प्रारम्भिक वस्तुओं की अधिकतम वृद्धि से है। दूसरों को ये वस्तुओं कितनी मात्रा में मिलती हैं इससे उन पर कोई प्रभाव नहीं होगा। ऐसी हालात में कोई मनुष्य जोखिम उठाने और जुआ खेलने के लिए तैयार नहीं होगा न उन्हें यह पता है कि उन्हें कितना दाँव लगाना है। इस अनिश्चितता की स्थिति में वे सबसे खतरनाक रास्ता चुनेंगे। न्याय का मूल सिद्धान्त होगा कि आप का दरिद्र के हित में या न्यूनतम स्थिति वाले को अधिकतम लाभμजब मूल स्थिति की उपरोक्त शर्तें पूरी हो जाएगी तो कोई भी वार्ताकार कोई जोखिम नहीं उठाएगा क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को शंका रहेगी कि कहीं यथार्थता सामने आने पर वह अपने को हीनतम स्थिति में न पाए और प्रत्येक व्यक्ति माँग करेगा कि जो हीनतम स्थिति में है उसे अधिकतम मिलना चाहिए इस कारण सब लोग न्याय के निम्नलिखित नियमों को स्वीकार कर लेंगे।

रॉल्स के न्याय के नियम इस प्रकार होंगे।

राल्स के न्याय के नियम

1कृसमान स्वतंत्राता का सिद्धान्त प्रत्येक व्यक्ति को सबसे विस्तृत स्वतन्त्राता का ऐसा समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए जो दूसरों को वैसा ही स्वतंत्राता के साथ निभा सकता हो।

2.	भेद मूलक सिद्धान्त	इसमें सबसे हीनतम स्थिति वाले को अधिकतम लाभ हो।
3.	अवसर की उचित समानता का सिद्धान्त	ये विषमताएँ उन पदों और स्थितियों के साथ जुड़ी हो जो अवसर की उचित समानता की शर्तों पर सबके लिए सुलभ हो

न्याय के विविध रूप

(1) कानूनी–औपचारिक न्याय और प्राकृतिक न्यायμजब दो पक्षों के परस्पर विरोधी दावों का पफैसला करने के लिए या किसी व्यक्ति या संस्था के अधिकार एवं दायित्व निर्धारित करने के लिए प्रचलित कानून के अनुसार न्याय किया जाता है, तब उसे कानूनी न्याय कहते हैं। उदाहरण के लिए, जब देश के कानून के अनुसार किसी अपराधी को दण्ड दिया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय जब अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार कोई पफैसला देता है तो वह भी कानूनी न्याय होता है।

(2) सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्यायμव्यापक अर्थ में सामाजिक न्याय शब्दावली से 'सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तीनों के न्याय का बोध हो जाता है। सीमित अर्थ में 'सामाजिक न्याय का तात्पर्य यह है कि सामाजिक जीवन में सब मनुष्यों की गरिमा स्वीकार की जाए'।

आर्थिक न्याय का अर्थ है कि 'उत्पादन की प्रक्रिया में कोई व्यक्ति दूसरे के जीवन को नियन्त्रित करने और उनसे मनमानी शर्तों पर काम करने की शक्ति प्राप्त न कर ले'। राजनीतिक न्याय का अर्थ है कि 'सार्वजनिक नीतियाँ निर्धारित करने की प्रक्रिया में सबको प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लेने का अवसर और अधिकार प्राप्त हो'।

प्रमुख न्याय आदर्श

1कृ राजनैतिक न्याय स्वतन्त्राता 2कृ आर्थिक न्याय समानता 3कृ सामाजिक न्याय बन्धुता

(3) मुक्त बाजार न्याय या प्रक्रियात्मक न्याय बनाम राज्य का हस्तक्षेपμमुक्त बाजार की धारणा न्याय की उदारवादी धारणा से जुड़ी है इसके अनुसार व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध अनुबन्ध की स्वतन्त्राता पर आधारित होने चाहिए। राज्य का कार्य है कि कोई व्यक्ति या वर्ग छल से या बल से दूसरे व्यक्ति या वर्ग को दबा न पाए इसे दौड़ प्रतियोगिता के उदाहरण से समझा जा सकता है।

दौड़ में कौन आगे रहेगा, कौन पीछे रह जाएगा इस बारे में पहले से कोई धारणा बना लेना उचित नहीं

है। दौड़ प्रतियोगिता के निरीक्षक का काम केवल यह देखना है कि कोई प्रतियोगी दूसरे को धोखा न दे, दौड़ के नियमों का उल्लंघन न करे, या कोई उत्तेजक दवा लेकर जबर्दस्ती दूसरों से आगे निकलने की कोशिश न करे।

;1द्ध मुक्त बाजार में व्यक्ति को ज्यादा विकल्प उपलब्ध होते हैं।

;2द्ध मुक्त बाजार में जो सेवा मुहैÕया करायी जाती है उनकी गुणवत्ता सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सेवाओं से बेहतर होती है।

लेकिन मुक्त बाजार आमतौर पर पहले से ही सुविधा सम्पन्न लोगों के हक में काम करने का रुझान दिखाते है। इसी वजह से अनेक लोग तर्क करते है कि सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए राज्य को यह सुनिश्चित करने की पहल करनी चाहिए, कि समाज के तमाम सदस्यों को बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हों। अवतरण पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित अवतरण को ध्यान पूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

''तमाम संस्कृतियों और परम्पराओं को न्याय के प्रश्न से जूझना पड़ा है, भले ही उसने इस अवधारणा की व्याख्या भिन्न–भिन्न तरीकों से की हो। उदाहरण के लिए प्राचीन भारतीय समाज में न्याय धर्म के साथ जुड़ा था और धर्म या न्यायोचित्त सामाजिक व्यवस्था कायम रखना राजा का प्राथमिक कर्तव्य था। ईसा पूर्व चौथी सदी के एथेंस ;यूनानद्ध में प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'द रिपब्लिक' में न्याय के मुद्दों पर चर्चा की है। प्लेटो के गुरु सुकरात ने नौजवानों से पूछा कि हमें न्यायसंगत क्यों होना चाहिए। जो अन्यायी हैं, वे न्यायी लोगों से ज्यादा बेहतर स्थिति में हैं। सुकरात ने उन नौजवानों को याद दिलाया कि यदि हर कोई अन्यायी हो जाए, यदि हर आदमी अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कानून के साथ खिलवाड़ करे, तो किसी के साथ भी और किसी के लिए भी अन्याय में लाभ पाने की गारंटी नहीं रहेगी। कोई भी सुरक्षित नहीं रहेगा और इससे सम्भव है कि सबको नुकसान पहुँचे। इसलिए हमारा दीर्घकालिक हित इसी में है कि हम कानून का पालन करें और न्यायी बनें।

;1द्ध भारतीय समाज में न्याय किसके साथ जुड़ा था? 1

;2द्ध कहाँ पर प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'द रिपब्लिक' में न्याय के मुद्दों पर चर्चा की थी? 1

;3द्ध सुकरात ने नौजवानों को न्यायी बनने की प्रेरणा क्यों दी? 3

2. निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

''आज अधिकांश उदारवादी जनतन्त्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण अधिकार दिये गये हैं। इनमें जीवन स्वतन्त्राता

और संपत्ति के अधिकार जैसे नागरिक अधिकार शामिल हैं। इसमें समाज के अन्य सदस्यों के साथ समान अवसरों के उपभोग करने का सामाजिक अधिकार और मताधिकार जैसे राजनीतिक अधिकार भी शामिल हैं। ये अधिकार व्यक्तियों को राज प्रक्रियाओं में भागीदार बनाते हैं।

;1द्ध किसी एक सामाजिक तथा एक राजनीतिक अधिकार का नाम लिखिए। 2

;2द्ध उदारवादी जनतन्त्रा क्या है? विस्तार पूर्वक समझाइए। 3

3. नीचे दिए गए कार्टून को ध्यानपूर्वक देखिए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

न्याय की देवी

;कद्ध दिए गए कार्टून में क्या दर्शाया गया है। 1

;खद्ध चित्रा में दी गयी महिला की आँखों पर पट्टी क्यों बंधी है। 1

;गद्ध दी गयी तुला क्या प्रदर्शित करती है विस्तार पूर्वक समझाइए? 3

4. दिए गए मानचित्रा पर आधरित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत के राजनीतिक मानचित्रा पर आधरित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

;1द्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय से सम्बन्धित राज्य को चिन्हित कीजिए। 1

;2द्ध वह राज्य जिसका न्यायालय सर्वाधिक प्रदेशों के नागरिकों को न्याय प्रदान करता है। 1

;3द्ध अण्डमान निकोबार द्वीप के नागरिकों को न्याय किस प्रदेश के न्यायालय में मिलेगा चिन्हित कीजिए। 1

;4द्ध चंडीगढ़ से सम्बन्धित राज्यों को चिन्हित कीजिए। 1

dk;Zdyki (Working Sheet)

;1द्ध प्लेटो किस देश का निवासी था?)

;कद्ध भारत का ;खद्ध चीन ;गद्ध ऑस्ट्रेलिया ;घद्ध यूनान

;2द्ध किसने कहा कि हर मनुष्य की गरिमा होती है?)

;कद्ध सुकरात ;खद्ध कांट ;गद्ध चाणक्य ;घद्ध हीगल

;3द्ध अज्ञानता के आवरण का सिद्धान्त किसके द्वारा दिया गया?)

;कद्ध सालमण्ड ;खद्ध कांट ;गद्ध जॉन राल्स ;घद्ध बर्लिन

;4द्ध 'द रिपब्लिक' नामक पुस्तक के लेखक हैं।)

;कद्ध ग्लाकान ;खद्ध थ्रेसीमेकस ;गद्ध प्लेटो ;घद्ध पोलीमार्क्स

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए।

;1द्ध प्राचीन भारतीय समाज में न्याय............के साथ जुड़ा था।)

;2द्ध चीन के दार्शनिक.................का तर्क था कि गलत करने वालों का दण्डित कर और भले लोगों को पुरस्कृत कर राजा को न्याय कायम करना चाहिए।)

;3द्ध रंग भेद की समाप्ति................न्याय की श्रेणी में आता है।)

;4द्ध भारत में न्याय स्थापित करने वाली सर्वोच्च संस्था...........है।)

निम्नलिखित वाक्यों को गलत और सही के रूप में चुनिए।

;1द्ध विशेष जरूरतों का सिद्धान्त सभी के साथ समान बरताव के विरुद्ध है।)

;2द्ध कुछ लोगों को प्रकृति ने ही आलसी बनाया है अतः हमें उनके प्रति दयालु होना चाहिए।

;3द्ध सभी के लिए बुनियादी सुविधाएँ और न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित करना साझी मानवता और मानवाधिकारों को स्वीकृति है।)

;4द्ध शक्तिशाली का हित ही न्याय है।)

निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए।

सिद्धान्त विद्वान का नाम

;1द्ध अज्ञानता के आवरण का सिद्धान्त ग्लाकान

;2द्ध दुर्बल का हित ही न्याय है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर

;3द्ध करुणा से भरा समाज न्यायपूर्ण है। जॉन लॉक

;4द्ध जीवन स्वतन्त्राता और सम्पत्ति प्रकृति प्रदत्त है जॉन रॉल्स

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में होने चाहिए।

;1द्ध आनुपातिक न्याय के संस्थापक कौन थे? 1

;2द्ध भारत में सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए किए गए किसी एक प्रयास को लिखिए। 1

;3द्ध न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति किस न्याय की विशेषता है? 1

;4द्ध पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति किस प्रकार की व्यवस्था में होगी? 1

लघु उत्तरीय प्रश्न

;1द्ध समान लोगों के प्रति समान बरताव न्याय की किस श्रेणी में आता है? विस्तार पूर्वक व्याख्या कीजिए। 4

;2द्ध मुक्त बाजार बनाम राज्य के हस्तक्षेप को न्याय के सम्बन्ध में स्पष्ट कीजिए। 4

;3द्ध समानुपातिक न्याय क्या है? समान लोगों के प्रति समान बरताव के सिद्धान्त से इसका किस प्रकार सन्तुलन बढ़ाया जा सकता है। स्पष्ट कीजिए। 4

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

;1द्ध जॉन रॉल्स के न्याय सम्बन्धी सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए। 6

;2द्ध संरक्षात्मक भेदभाव को समझाते हुए इसकी न्यायसंगतता को स्पष्ट कीजिए। 6

;3द्ध भारत में सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए किन्हीं चार कदमों की व्याख्या कीजिए। 6

;4द्ध आर्थिक न्याय के बिना राजनैतिक न्याय निरर्थक है'' इस कथन के सन्दर्भ में आलोचनात्मक विवेचन करें। 6